

भोग लगाना स.क्रि. (देश.) देवी-देवताओं के समक्ष भोज्य वस्तु अर्पण करना, नैवेद्य चढ़ाना।

भोगली स्त्री. (देश.) 1. नाक के बीच वाले स्थान में पहने जाने वाला आभूषण 2. तरकी, तरौना नामक कान में पहनने वाला आभूषण 3. नाक या कान में पहनने वाली लौंग या फूल को पीछे से बंद करने वाली पतली कील 4. पतली नली।

भोगवती स्त्री. (तत्.) 1. पाताल गंगा 2. गंगा 3. पाताल में स्थित नागों की एक नगरी।

भोगवाद पुं. (तद्.) उपभोग की हर वस्तु के भरसक उपयोग की लालसा टि. इसमें वस्तु की उपलब्धता को ध्यान में नहीं रखा जाता।

भोगविलास पुं. (तत्.) वासनापूर्ण दृष्टि से सुख का भोग, मौज-मस्ती, ऐशो-आराम, विलासिता वाला आमोद-प्रमोद।

भोगांश पुं. (तत्.) ज्यो. में राशियों तथा नक्षत्रों की स्थिति का काल, देशांतर गणना के हिसाब से स्थिति की विशेष अवधि भोगांश कहलाती है।

भोगायतन पुं. (तत्.) शरीर, देह, जिस्म।

भोगासक्ति स्त्री. (तत्.) सांसारिक सुख-सुविधा में लिप्त रहने की प्रवृत्ति।

भोगी वि. (तत्.) 1. विषय-वासना में लिप्त 2. जरूरत से ज्यादा सुख की इच्छा रखने वाला 3. विषयी, कामुक पुं. (तत्.) 1. गृहस्थ व्यक्ति, विषयी व्यक्ति 2. राजा 3. नाग, सर्प।

भोग्य वि. (तत्.) 1. उपभोग करने योग्य 2. जिसका उपभोग किया जाने वाला हो 3. लाभकारी 4. सहा जाने वाला पुं. धन-संपत्ति, जायदाद।

भोग्यमान वि. (तद्.) जिसका अभी तक उपभोग न किया गया हो, लेकिन उपभोग योग्य हो गया हो, भोग के लिए तैयार।

भोग्या वि. (तत्.) उपभोग करने योग्य 2. स्त्री (तद्.) वेश्या।

भोज पुं. (तत्.) 1. बहुत से लोगों का, इकट्ठे बैठ कर, निमंत्रण के अनुसार भोजन करना, प्रीति

भोज, जेवनार, ज्योनार, दावत 2. मालव प्रदेश का एक प्रसिद्ध राजा, भोजराज, संस्कृत के एक प्रसिद्ध कवि 3. खाने की वस्तु।

भोजक पुं. (तत्.) भोग करने वाला, विलासी, ऐयाश 2. सदा उपभोग करने की इच्छा वाला।

भोजग्राही वि. (तत्.) भोजन खाने वाला, ऐसा व्यक्ति जो जलाहारी अथवा पवनहारी न हो, जो कुछ खाता भी हो टि. एक समूह में यदि कुछ लोग भोजन प्राप्त करने वाले न हो, तो शेष लोग भोजन ग्राही कहे जा सकते हैं।

भोजदेव पुं. (तत्.) 1. राजा भोज अथवा भोज राज, गुण ग्राहकता तथा दानशीलता के लिए प्रसिद्ध परमारवंशीय राजा 2. संस्कृत के विख्यात साहित्यकार (11.वीं शती ई.)।

भोजन पुं. (तत्.) 1. भूख मिटाने के लिए खाने की वस्तु 2. आमंत्रित व्यक्तियों को परोसी जाने वाली खाद्य सामग्री 3. रोगी के लिए खाने का पदार्थ, जो उस के उपयुक्त हो, पथ्य।

भोजनगृह पुं. (तत्.) वह स्थान जहाँ भोजन लिया जाता है।

भोजननलिका स्त्री. (तत्.) चबाए गए या निगले गए भोजन को आमाशय तक पहुँचाने वाली नली।

भोजनभट्ट वि. (तत्.) बहुत खाना खाने वाला, पेटू।

भोजनालय पुं. (तद्.) वह स्थान जहाँ से, पैसे देकर, भोजन प्राप्त किया जाए टि. भोजनालय में खाना खाने की भी ठीक-ठाक व्यवस्था होती है।

भोजनीय वि. (तद्.) जो खाने योग्य हो।

भोजपत्र पुं. (तत्.) भूर्ज नाम का वृक्ष जो ऊँचे पर्वतों पर पाया जाता है टि. इस वृक्ष की छाल से पतली-पतली परते उतरती हैं यही भोज पत्र हैं, कागज़ के आविष्कार के पूर्व भोजपत्रों पर ही लिखने का कार्य किया जाता था।